ISSN 2581-9917

जानी अनजानी चोट

निर्मला जैन*

कभी-कभी बच्चे बाहर ऐसी बात कह देते हैं कि सुनकर बड़ों को लज्जा अनुभव होती है। हम एकान्त में उन्हें समझाते हैं कि ऐसा नहीं कहना चाहिए, उन्हें बुरा लग सकता है। पर कभी-कभी बड़े भी ऐसी बात करते हैं कि सुनकर हैरानी और परेशानी होती है। बहुत बार अचानक मुँह से कोई बात निकल जाती है और कई बार जानबूझ कर भी मर्म पर चोट की जाती है। आजकल प्रदर्शन का युग है, सीधा-साधा व्यक्ति मूर्ख समझा जाता है। पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियाँ प्रदर्शन करने में कहीं आगे हैं। यदि कोई स्त्री धनाभाव या किसी अन्य कारण से फैशन की दौड़ में पीछे रह जाती है, तो इन स्त्रियों को उस पर छींटाकशी करने का आनन्ददायक अवसर मिल जाता है।

मोटा या दुबला होना कोई अनोखी बात नहीं। परन्तु इसमें भी कई लोगों को मजाक उड़ाने का मसाला मिल जाता है। कुछ मूर्ख मोटे ताजे की तर्ज पर दुबले पतले लोगों का उपहास उड़ाते हैं। मुझे एक दुबली स्त्री ने बताया कि उसे याद नहीं कि उसने कितनी बार इस एक ही प्रश्न का सामना किया है। 'तुम इतनी सूखी क्यों हो? क्या तुम्हें खाना नहीं मिलता? प्रश्नकर्त्ताओं में नब्बे प्रतिशत स्त्रियाँ थीं। किसी से ऐसे शब्द से प्रश्न पूछना उसका सरासर अपमान करना है। दुबलेपन के कई कारण हो सकते

* स्वतन्त्र लेखिका।

हैं- जैसे कोई शारीरिक कष्ट, लम्बी बीमारी की कमजोरी, मानसिक संताप, अधिक कार्यभार अथवा विशिष्ट शारीरिक रचना। सच्ची सहानुभूति रखने वाले से कोई अपनी व्यथा कह सकता है, पर इस तरह का प्रश्न करने वाले अकसर हमदर्द नहीं होते।

स्त्रियों की दोपहर की महफिल प्रसिद्ध है। शक्ल सूरत, कपड़े, खाना आदि इस महफिल के नित्य विषय हैं। भद्दी, डरावनी, अजीब, बदशक्ल आदि विशेषणों का इसमें खुलकर प्रयोग होता है। एक बार अचानक एक स्त्री ने एक नन्हीं बालिका को बुलाकर सबके सामने पूछा- क्यों री, तुझे सदा यही फ्रॉक पहने देखती हूँ, क्या तेरे पास और कपड़े नहीं हैं? इस बात को लेकर वहां जबरदस्त हंगामा हुआ कि कई दिनों तक मुहल्लेवालों ने तमाशा देखा। किसी के पास कपड़े कम हों, कीमती सामान नहीं हों, रहन-सहन का स्तर नीचा हो, तो उस पर दूसरों को आक्षेप करने का अथवा प्रत्यक्ष अपमान करने का क्या अधिकार है? इसलिए कहते हैं कि पहले तोलिए और फिर बोलिए, क्योंकि तलवार का घाव चाहे भर जाए, बोली का कभी नहीं भर सकता। यही नहीं लड़ाई झगड़े में भी वाणी पर थोड़ा संयम आवश्यक है। लड़ाई के समय कई कटु बातें कह दी जाती हैं और मेल होने पर उन्हें भुला दिया जाता है। पर अकसर व्यक्ति क्रोध में इतना संतुलन खो बैठता है कि दूसरे के मर्म पर असह्य चोट कर बैठता है। ये चोट बैर का कारण बनती है।

कभी-कभी असावधानी के कारण अवसरानुकूल बात नहीं कही जाती। इससे दूसरे पक्ष को निराशा हो सकती है। एक बार मैं सुधा के साथ अंजना के घर गई। कढ़ाई-बुनाई पर बातचीत चल रही थी। अंजना ने बड़े चाव से अपनी बारह वर्षीय पुत्री के काढ़े हुए वस्त्र दिखलाए। सुधा बोली- 'अरे ये क्या है? मेरी मौसी की लड़की इससे कुछ छोटी ही होगी, पर ऐसी कढ़ाई करती है कि बड़े भी वैसा क्या ही कर पाएंगे।' अंजु के मुख का भाव देखकर मैंने कुछ प्रशंसात्मक शब्द कहे, पर भावनाओं को ठेस तो लग ही चुकी थी।

****

Images Clicked by Ramita Yadav